अध्याय 5: रहीम के दोहे

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 10 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1	मेरी समझ से	2 प्रश्न
प्रश्नावली 5.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 5.3	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 5.4	सोच-विचार के लिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 5.5	शब्दों की बात — शब्द-संपदा	1 प्रश्न
प्रश्नावली 5.6	शब्दों की बात — शब्द एक अर्थ अनेक	1 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

नीचे दिए गए प्रश्न का सबसे सही (सटीक) उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।" दोहे का भाव है— (क) सोच-समझकर बोलना चाहिए। (ख) मधुर वाणी में बोलना चाहिए। (ग) धीरे-धीरे बोलना चाहिए। (घ) सदा सच बोलना चाहिए।

हल

सही उत्तर: (क) सोच-समझकर बोलना चाहिए।
इस दोहे में रहीम कहते हैं कि जीभ बावरी (पागल) होती है — वह स्वर्ग-पाताल तक की बातें कह देती है, पर जूते (मार) तो माथे (सिर) को खाने पड़ते हैं।
अर्थात जीभ जो बोलती है उसका परिणाम पूरे शरीर और व्यक्तित्व को भुगतना पड़ता है।
इसलिए बिना सोचे-समझे नहीं बोलना चाहिए — यही दोहे का मुख्य भाव है।

उत्तर: (क) सोच-समझकर बोलना चाहिए।

प्रश्न 2

नीचे दिए गए प्रश्न का सबसे सही (सटीक) उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— "रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।" इस दोहे का भाव क्या है? (क) तलवार सुई से बड़ी होती है। (ख) सुई का काम तलवार नहीं कर सकती। (ग) तलवार का महत्व सुई से ज्यादा है। (घ) हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्व होता है।

हल

सही उत्तर: (घ) हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्व होता है।
रहीम कहते हैं — बड़े लोगों (या बड़ी चीज़ों) को देखकर छोटों को महत्वहीन मत समझो।
जहाँ सुई की जरूरत हो, वहाँ तलवार काम नहीं आती — सिलाई का काम सुई से ही होगा, तलवार से नहीं।
इसलिए छोटे-बड़े सभी का अपना-अपना महत्व है।

उत्तर: (घ) हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्व होता है।

प्रश्नावली 5.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

पाठ में से कुछ दोहे स्तंभ 1 में दिए गए हैं और उनके भाव स्तंभ 2 में दिए गए हैं। रेखा खींचकर सही भाव से मिलान कीजिए— स्तंभ 1 | स्तंभ 2 1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।। | 1. सज्जन परहित के लिए ही संपत्ति संचित करते हैं। 2. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत। बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।। | 2. सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं। 3. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।। | 3. प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।

हल

दोहा 1 → भाव 3: प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।
(प्रेम का धागा टूट जाए तो फिर नहीं मिलता — इसलिए संबंधों को तोड़ना नहीं चाहिए।)
दोहा 2 → भाव 2: सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं।
(सच्चे मित्र की परख विपत्ति की कसौटी पर होती है — जो मुसीबत में भी साथ दे, वही सच्चा मीत है।)
दोहा 3 → भाव 1: सज्जन परहित के लिए ही संपत्ति संचित करते हैं।
(वृक्ष अपना फल नहीं खाता, तालाब अपना पानी नहीं पीता — सज्जन दूसरों के भले के लिए संपत्ति जोड़ते हैं।)

उत्तर: दोहा 1 → भाव 3 | दोहा 2 → भाव 2 | दोहा 3 → भाव 1

प्रश्नावली 5.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

नीचे दिए गए दोहे का अर्थ या भावार्थ लिखिए— "रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय। हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।"

हल

कठिन शब्दों के अर्थ: बिपदा = विपत्ति/मुसीबत; थोरे = थोड़े; हित = मित्र/हितैषी; अनहित = शत्रु/अहितकर।
भावार्थ: रहीम कहते हैं — यदि विपत्ति थोड़े दिनों की हो तो वह भी भली है।
क्योंकि मुसीबत के समय ही यह पता चलता है कि इस संसार में कौन हमारा सच्चा हितैषी है और कौन हमारा शत्रु।
सुख के दिनों में सभी साथ रहते हैं, परंतु दुख में जो साथ दे — वही सच्चा मित्र होता है।
विपत्ति मनुष्य की पहचान कराने वाली कसौटी है।

उत्तर: विपत्ति भी भली होती है यदि थोड़े दिन की हो, क्योंकि तभी सच्चे और झूठे साथियों की पहचान होती है।

प्रश्न 2

नीचे दिए गए दोहे का अर्थ या भावार्थ लिखिए— "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।"

हल

कठिन शब्दों के अर्थ: जिह्वा = जीभ; बावरी = पागल/विवेकहीन; सरग = स्वर्ग; पताल = पाताल; आपु = स्वयं; जूती = चप्पल/जूता; कपाल = माथा/सिर।
भावार्थ: रहीम कहते हैं — जीभ बावरी (पागल) है, जो स्वर्ग से लेकर पाताल तक की बातें (उल्टी-सीधी) कह देती है।
वह (जीभ) तो बोलकर मुँह के भीतर बैठ जाती है, परंतु उसके कहे का परिणाम माथे (सिर) को जूते (मार) खाकर भुगतना पड़ता है।
अर्थात बिना सोचे-समझे बोलने पर स्वयं को शर्मिंदगी और मार का सामना करना पड़ता है।
इसलिए वाणी पर संयम रखना चाहिए — सोच-समझकर बोलना चाहिए।

उत्तर: जीभ पागल है — बिना सोचे उल्टी-सीधी बातें कह देती है, और उसके परिणाम में माथे को मार खानी पड़ती है। अतः सोच-समझकर बोलना चाहिए।

प्रश्नावली 5.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

दोहे को पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर लिखिए— "रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।" (क) इस दोहे में 'मिले' के स्थान पर 'जुड़े' और 'छिटकाय' के स्थान पर 'चटकाय' शब्द का प्रयोग भी लोक में प्रचलित है, जैसे— "रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय। टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।" इसी प्रकार पहले दोहे में 'डारि' के स्थान पर 'डार', 'तलवारि' के स्थान पर 'तरवार' और चौथे दोहे में 'मानुष' के स्थान पर 'मानस' का उपयोग भी प्रचलित है। ऐसा क्यों होता है?

हल

यह लोकभाषा की स्वाभाविक विविधता के कारण होता है।
रहीम की कविता ब्रजभाषा और अवधी जैसी लोकभाषाओं में लिखी गई है — ये बोलियाँ क्षेत्र और समय के अनुसार थोड़ी बदलती हैं।
जब दोहे मौखिक परंपरा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचते हैं, तो लोग उन्हें अपनी बोली के अनुसार थोड़ा बदलकर याद करते और सुनाते हैं।
जैसे 'मिले' और 'जुड़े' का अर्थ लगभग समान है, 'छिटकाय' और 'चटकाय' ध्वनि में मिलते-जुलते हैं — इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग रूप प्रचलित हो गए।
इस प्रकार एक ही भाव को लोक-परंपरा में अनेक रूपों में कहा जाता है।

उत्तर: लोकभाषाओं की क्षेत्रीय विविधता और मौखिक परंपरा के कारण एक ही दोहे के कई रूप प्रचलित हो जाते हैं।

प्रश्न 2

दोहे को पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर लिखिए— "रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।" (ख) इस दोहे में प्रेम के उदाहरण में धागे का प्रयोग ही क्यों किया गया है? क्या आप धागे के स्थान पर कोई अन्य उदाहरण सुझा सकते हैं? अपने सुझाव का कारण भी बताइए।

हल

धागे का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि धागा दो चीज़ों को जोड़ता है — ठीक उसी तरह प्रेम भी दो लोगों को आपस में बाँधता है।
धागा बहुत नाजुक होता है — एक बार टूट जाए तो दोबारा पूरी तरह नहीं जुड़ता; और यदि जोड़ा भी जाए तो गाँठ पड़ जाती है।
इसी प्रकार प्रेम और विश्वास का रिश्ता भी नाजुक होता है — एक बार टूटने पर वह पहले जैसा नहीं रहता।
धागे का यह स्वभाव प्रेम की नाजुकता को बहुत सुंदर तरीके से समझाता है।
अन्य उदाहरण (सुझाव): काँच — काँच बहुत नाजुक होता है, एक बार टूटे तो टुकड़े हो जाते हैं; जोड़ने पर भी जोड़ दिखती है। इसी प्रकार प्रेम भी काँच की तरह नाजुक है।

उत्तर: धागा प्रेम की नाजुकता का प्रतीक है — वह जोड़ता है पर टूटने पर गाँठ छूट जाती है। इसी प्रकार प्रेम एक बार टूटे तो पहले जैसा नहीं रहता।

प्रश्न 3

दोहे को पढ़कर बताइए— "तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिँ न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।" इस दोहे में प्रकृति के माध्यम से मनुष्य के किस मानवीय गुण की बात की गई है? प्रकृति से हम और क्या-क्या सीख सकते हैं?

हल

इस दोहे में प्रकृति के माध्यम से 'परोपकार' (दूसरों की भलाई करना) नामक मानवीय गुण की बात की गई है।
वृक्ष (तरुवर) अपने फल स्वयं नहीं खाता — दूसरों को देता है। तालाब (सरवर) अपना पानी स्वयं नहीं पीता — दूसरों की प्यास बुझाता है।
इसी प्रकार सज्जन (सुजान) व्यक्ति अपनी संपत्ति दूसरों के भले के लिए संचित करते हैं।
प्रकृति से हम और भी बहुत कुछ सीख सकते हैं—

- नदी — सदा बहती रहती है, दूसरों को जीवन देती है।
- सूरज — बिना भेदभाव के सभी पर प्रकाश बिखेरता है।
- पृथ्वी — सबका बोझ उठाती है और बदले में कुछ नहीं माँगती।
- फूल — अपनी सुगंध सभी को देता है।

उत्तर: इस दोहे में 'परोपकार' (दूसरों की भलाई के लिए जीना) का मानवीय गुण बताया गया है। प्रकृति हमें निःस्वार्थ सेवा, सबको समान देना, और संचित करके बाँटना सिखाती है।

प्रश्नावली 5.5 — शब्दों की बात — शब्द-संपदा

प्रश्न 1

कविता में आए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन शब्दों को आधुनिक हिंदी में (समानार्थक शब्द) लिखिए— कविता में आए शब्द | आधुनिक हिंदी में समानार्थक शब्द 1. तरुवर | ? 2. बिपति | ? 3. छिटकाय | ? 4. सुजान | ? 5. सरवर | ? 6. साँचे | ? 7. कपाल | ?

हल

1. तरुवर → वृक्ष / पेड़
2. बिपति → विपत्ति / मुसीबत / संकट
3. छिटकाय → झटके से / तोड़कर / फेंककर (ब्रज: झटकारकर अलग करना)
4. सुजान → सज्जन / बुद्धिमान / विवेकशील
5. सरवर → सरोवर / तालाब / जलाशय
6. साँचे → सच्चे / खरे / वास्तविक
7. कपाल → माथा / ललाट / सिर

उत्तर: तरुवर = वृक्ष | बिपति = विपत्ति | छिटकाय = झटके से तोड़कर | सुजान = सज्जन/बुद्धिमान | सरवर = सरोवर/तालाब | साँचे = सच्चे | कपाल = माथा/ललाट

प्रश्नावली 5.6 — शब्दों की बात — शब्द एक अर्थ अनेक

प्रश्न 1

"रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून। पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।" इस दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं — सम्मान, जल, चमक। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों के तीन-तीन अर्थ लिखिए— शब्द | अर्थ 1 | अर्थ 2 | अर्थ 3 कल | ? | ? | ? पत्र | ? | ? | ? कर | ? | ? | ? फल | ? | ? | ?

हल

कल — (1) बीता हुआ दिन / आने वाला दिन (कल आऊँगा), (2) मशीन / कारखाना (कल-कारखाना), (3) चैन / आराम (मुझे कल नहीं है)

पत्र — (1) चिट्ठी / पत्रिका (पत्र लिखना), (2) पत्ता / पर्ण (वृक्ष का पत्र), (3) धातु की पतली चादर (ताम्रपत्र / सोने का पत्र)

कर — (1) हाथ (कर जोड़कर प्रणाम करना), (2) टैक्स / कर (सरकार को कर देना), (3) किरण / सूर्य-रश्मि (रवि-कर = सूर्य की किरण)

फल — (1) खाने का फल (आम, केला आदि), (2) परिणाम / नतीजा (मेहनत का फल), (3) ढाल/तलवार की धार (खड्ग का फल)

उत्तर: कल = कल (समय) / मशीन / चैन | पत्र = चिट्ठी / पत्ता / धातु-पत्र | कर = हाथ / टैक्स / किरण (सूर्य-रश्मि) | फल = खाने का फल / परिणाम / तलवार की धार